

opfernd; von Agni AV. 12, 2, 42 (देवयज्ञ VS.). — b) zum Götteropfer dienend AV. 10, 3, 15. पृथिवी VS. 1, 25, 3, 5. ÇAT. Br. 3, 2, 20. — 2) n. Götteropferplatz, Opferstätte AV. 9, 6, 3. VS. 1, 26, 31. 4, 1, 22. AIT. Br. 1, 13, 7, 20. एतद्वा इयममुष्यां देवयज्ञनमदधाद्यदेतच्छन्द्रमसि कृत्तमिव 4, 27. ÇAT. Br. 1, 2, 5, 18. 3, 1, 1, 1. fgg. 14, 1, 1, 2. KĀTJ. ÇR. 15, 3, 47. 20, 4, 14. KAUC. 60. प्रयागे देवयज्ञे देवराण्येषु चैव ह MBH. 5, 7354. Brāg. P. 2, 6, 23. ०वत् SHADY. Br. 2, 10.

देवयज्ञि (देव + यज्ञि) adj. die Götter ehrend, den Göttern opfernd UGÉVAL. zu UNĀDIS. 4, 117. द्विज BHATTI. 2, 34.

देवयज्ञ (देव + यज्ञ) m. 1) Götteropfer, Brandopfer (eine der fünf Arten von Opfer) H. 821. यद्यग्नौ जुहोति स देवयज्ञः ĀCY. GRH. 3, 1. ÇAT. Br. 11, 3, 6, 1. M. 4, 21; vgl. 3, 70, 71. ०मय adj. HARIV. 11406. — 2) N. pr. eines Mannes; vgl. देवयज्ञि, देवयज्ञपाण्डितसूर्य.

देवयज्ञ्य (देव + यञ्) n. Gottesverehrung, Götteropfer: आ यो मात्राभूशेन्यो जनिष्ठ देवयज्ञ्याय सुकृतुः पावकः RV. 7, 3, 9. f. ०यज्ञ्या dass. P. 3, 1, 123. अश्याम ते समति देवयज्ञ्या RV. 1, 11, 4, 3. 5, 21, 4, 8, 60, 12. 10, 66, 7, 30, 15. देवयज्ञं मे देहि देवयज्ञ्या AIT. Br. 7, 20. KAUC. 44. VS. 1, 13, 3, 42. ÇAT. Br. 1, 8, 1, 30. 3, 1, 1, 3. 8, 6, 1, 16. 13, 3, 1, 10. instr. gleichlautend: किनातो नो अर्धरे देवयज्ञ्या RV. 10, 30, 11 (Nir. 6, 22). ऊर्धो भव सुकृतो देवयज्ञ्या 70, 1, 107, 3.

देवयौ (देव + या) adj. zu den Göttern gehend, nach den Göttern verlangend, götterfreundlich: धियं धियं वो देव्या उ दधिघे RV. 1, 168, 1. अयं यज्ञो देव्या अयं मिषेधः 177, 4. देव्या विप्र उदेयति वाचम् 3, 8, 5. उद्विप्राणां देव्या वाचो अस्थुः 5, 76, 1. अग्नि 7, 68, 4. न सायमेस्ति देव्या अर्जुष्टम् 5, 77, 2; vgl. Nir. 12, 5.

देवयाज्ञन् (देव + याञ्) 1) adj. den Göttern opfernd ÇAT. Br. 11, 2, 6, 13. — 2) m. N. pr. eines Wesens im Gefolge des Skanda MBH. 9, 2572. eines Dānava HARIV. LANGL. II, 409 (die Calc. Ausg.: देवयाज्ञिन्).

देवयाज्ञिक m. N. pr. eines Autors, = याज्ञिकदेव Verz. d. B. H. No. 238. fgg. 1073.

देवयात s. u. देवयातु.

देवयातु m. ein himmlischer Jātu, Bez. einer besonderen Art von Jātu KĀTJ. 37, 14. Wohl so zu lesen st. देवयात (vgl. v. l. देवयातव) im gaṇa राजन्यादि zu P. 4, 2, 53.

देवयात्रा (देव + यात्रा) f. eine Procession mit Götterbildern HĀR. 129. MĀLAV. 69, 13. KATHĀS. 23, 121.

देवयात्रिन् (vom vorherg.) m. N. pr. eines Dānava HARIV. 12943; vgl. देवयाज्ञिन्.

देवयान (देव + यान) 1) adj. f. ई zu den Göttern gehend, — strebend: यद्विष्यन्मृत्यो देवयानं निर्मानुषाः पर्यस्य नयन्ति RV. 1, 162, 4. अग्नेः समिधः 10, 51, 2. यज्ञस् 181, 3. AV. 11, 1, 20. अष्ट्याः VS. 12, 73. Göttern zum Wandel, Verkehr, Aufenthalt dienend; so heissen namentlich die Pfade (पथिन), auf welchen die Himmlischen herniedersteigen, Opfer zu ihnen gelangen, überhaupt der Verkehr zwischen Himmel und Erde geht; der zu den Göttern führende Weg. RV. 1, 183, 6. 4, 37, 1. प्र मे पन्थो देवयाना अदधन् 7, 76, 2. 10, 51, 5. परं मृत्यो अन्तु परेहि पन्थो यस्ते स्व इतरे देवयानात् 18, 1. ये पन्थानो बृहवो देवयाना अन्तु राधावापृथिवी संचरति AV. 3, 15, 2. 9, 4, 3. 12, 2, 41. 18, 4, 2. 14. VS. 5, 33. 29, 2. TS. 2, 3, 14, 5. TBH.

III. Theil.

1, 3, 4, 3. 2, 4, 2, 6. AIT. Br. 3, 38. ÇAT. Br. 1, 9, 2, 2. 13, 2, 2, 12. MUND. UP. 3, 1, 6. PĀR. GRH. 3, 1. अघन् RV. 1, 72, 7. — ये देवयानाः पितृयानाश्च लोकाः सर्वान्यथो अन्तु आ क्षियम् AV. 6, 117, 3. समस्मिन्ल्लोके समु देवयाने सं स्मा समेतं यमरात्र्येषु 12, 3, 3. यास्ते रात्रीः सवितर्देवयानां रत्नराधावापृथिवी विपत्ति TS. 3, 3, 4, 2. स देवयानः केतुः ÇĀKṢ. Br. 2, 9. देवयानानां त्वा पतमन्नाधूनोमि KĀTJ. 30, 6. — देवयानेन पथा स्वर्गमुपेयुषः MBH. 3, 11000. 11006 (p. 569). 5, 793. 12, 525. 9609. 13, 4312. 14, 980. 15, 930. HARIV. 16256. अदेवयानमावृत्त पन्थानं समुपस्थिताः (असुराः) 6806. (दक्षिणा) आघातिनी गार्हितेषा पतती तेषां प्रेतान्प्रातये देवयानात् MBH. 13, 4318. त्रिलोको देवयानेन सो ऽतित्रय मुनीनपि Brāg. P. 4, 12, 34. पितृयानं देवयानं आत्राचक्रुतधराद्वज्ज 29, 13. देवयानमिदं (subst. n.) प्राङ्कः 7, 15, 55. अयं स देवयानानामादित्या दारमुच्यते । अयं च पितृयानानां चन्द्रमा दारमुच्यते ॥ MBH. 13, 1081. उपरिष्ठाच्च स्वर्लोका यो ऽयं स्वरिति संक्षितः । ऊर्ध्वगः सत्पथः शश्वदेवयानचरो मूने ॥ 3, 15442. उत्तरो (चतुर्वर्गः d. i. सत्य, क्षमा, दम, अलोभ) देवयानस्तु साद्विराचरितः सदा 123. अददेवयानाय यावद्विजितमविन्दत 1, 3681. n. Götterwagen ÇABDĀNTHAK. im ÇKDR. — 2) f. ई N. pr. einer Tochter des Uçanas, Gemahlin Jajāti's und Mutter Jadu's und Turvasu's, MBH. 1, 3159. 3153. fgg. 3305. fgg. 5, 5045. 7, 2297. 6030. HARIV. 1603. fg. VP. 413. Brāg. P. 5, 1, 35. 9, 18, 7. fgg. VĀJU-P. in Verz. d. Oxf. H. 49, a, ult.

देवयौवन् (देव + याञ्) adj. zu den Göttern gehend: ब्रह्मदूतो देवयावा वनिष्ठः RV. 7, 10, 2.

देवयितरु nom. ag. von 2. दिव् P. 3, 2, 147, Sch.

देवयु (von देवयु) UGÉVAL. zu UNĀDIS. 1, 38. adj. f. ऊ die Götter liebend, gottergeben, fromm: नरो यत्र देवयो मदति RV. 1, 134, 5. जन 4, 9, 1. 5, 48, 2. आ देवयु भजति गोमति ब्रजे 34, 5. एहि मनु देवयुर्गुप्तकामः 10, 51, 5. 8, 92, 7. 9, 96, 24. राष्ट्र देवयुनाम् AV. 8, 9, 13. शोचोषि RV. 7, 43, 2. Soma 9, 6, 1. 11, 2. 37, 1. 97, 4. देवयुवम् (ब्रह्मम्) ÇAT. Br. 1, 5, 2, 3. देवयुवम् acc. m. VS. 1, 12. = धार्मिक, सुकृत् TRIK. 3, 1, 12. MED. j. 85. = लोकयात्रिक (WILS.: frequenting holy festivals; dieses wäre देवयात्रिक) MED. m. Gott ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. यञ्.

देवयुक्त (देव + युञ्) adj. von Göttern geschirrt, von Rossen RV. 7, 67, 8.

देवयुग (देव + युग) n. das Weltalter der Götter, das erste Weltalter (कृतयुग) MBH. 1, 1073. 2, 421. 3, 8686. 10, 786. 12, 93. 13, 3903. HARIV. 991.

1. देवयोनौ (देव + योञ्) f. m. Götterschooss, göttlicher Schooss: यज्ञमानं यज्ञादेवयोनौ प्रजनयति AIT. Br. 3, 19. 6, 9. अग्निर्वै देवयोनौ 1, 22. 2, 3. ÇAT. Br. 7, 4, 2, 40. Bez. des Reibholzes: देवयोनिः स विज्ञेयस्तत्र मध्ये कुताशनः GRHJASAMGR. 1, 82.

2. देवयोनि (wie eben) adj. einen göttlichen Ursprung habend; subst. Halbgott: विद्याधरो ऽप्सरोयन्तरतो गन्धर्वकिनराः । पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतो ऽमी देवयोनयः ॥ AK. 1, 1, 1, 6. BHATTOTPALA zu VARĀH. BRH. S. 47, 55. 57, 9. fem. DEV. 5, 60.

देवयोषा (देव + योञ्) f. Götterweib: मनुचुदेवयोषाश्च पुष्पवर्षम् MBH. 9, 2714. कुती च माद्री च देवयोषोपमे भुवि HARIV. 3011.

देवैरु UNĀDIS. 2, 100. m. des Mannes Bruder, insbes. ein jüngerer, AK. 2, 6, 1, 32. H. 333. ननान्दरि सभाज्ञी भव सभाज्ञी अर्धं देवेषु RV.